समास एवम् उसके भेद

समास की परिभाषा :-

'समसनं' समासः अर्थात् समास को अर्थ संक्षेप होता है।

प्राकृत व्याकरण में समास की परिभाषा देते हुए बतलाया गया है कि दो या दो से अधिक पदों को इस प्रकार जोड़ा जाए कि जिससे शब्दों का आकार छोटा हो जाय, परन्तु अर्थ ज्यों का त्यों बना रहे, उसे समास कहते हैं। जैसे - धम्मस्स पुत्तो > धम्मपुत्तो (धर्मपुत्र)

नोट: ध्यातव्य है कि इस उदाहरण में पूर्व पद 'धम्मस्स' में 'धम्म' के साथ जुड़ी हुई सम्बन्ध कारक 'स्स' विभक्ति का समास होने के कारण लोप हो गया है। इस कारण संक्षिप्त होकर 'धम्मपुत्तो' हो गया है। किन्तु पूर्व और बाद के शब्दों के अर्थ में कोई परिवर्तन नहीं हुआ। दोनों स्थिति में इसका अर्थ 'धर्म का पुत्र' ही रहेगा।

समास के भेद :-

प्राकृत-व्याकरण के अनुसार समास के मुख्यतः चार भेद हैं।

(1) अव्ययी भाव समास (2) तत्पुरुष समास
(3) बहुव्रीही समास (4) द्वन्द्व समास

(1) अव्ययी भाव समास एवं उसके प्रकार :-

अव्ययी भाव की परिभाषा → जिसका पूर्व पद प्रधान हो एवम् समस्त शेष पद क्रिया विशेषण अव्यय हो, उसे अव्ययी भाव कहते हैं। जैसे -

दिणं दिणं पइ > पइदिणं (प्रतिदिन) (इसमें 'पइ' पूर्व पद प्रधान है, और अन्तिम पद क्रिया विशेषण अव्यय है।

अव्ययी भाव के ग्यारह प्रकार के प्रयोग :

अव्ययी भाव समास का प्रयोग निम्नलिखित ग्यारह प्रकार की प्रसंगों में होता है। जैसे -

1) विभक्ति अर्थ में :-
हरिम्मि इइ > अहिहरि (हरि के विषय में)

2) समीप के अर्थ में :-
राइणो समीवं > उवरायं (राजा के समीप)

तत्पुरुष के प्रकार :

इसके दो भेद हैं : (I) बहिकरण तत्पुरुष समास (II) सामानाधिकरण समास।

बहिकरण तत्पुरुष समास :

इसे सामान्य तत्पुरुष समास कहा जाता है। इसमें दो पद विभिन्न विभक्तियों वाले होते हैं। इसमें पूर्व पद द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ, पंचमी, छट्ठी एवम् सप्तमी विभक्तियों वाला होता है, और उत्तर पद प्रथमा विभक्ति वाली होता है। जैसे -

(I) सुहपत्तो > सुहपत्तो (सुख को प्राप्त) (इसके पूर्व पद में द्वितीया विभक्ति और अंतिम पद में प्रथमा विभक्ति का प्रयोग हुआ है)

(II) णरेसु सट्ठो > णर सेट्ठो (नरों में श्रेष्ठ) इसके पूर्व पद में सप्तमी विभक्ति और उत्तर पद में प्रथमा विभक्ति 'ओ' का प्रयोग होता है।

बहिकरण तत्पुरुष समास के भेद :

पूर्वपद की विभिन्न विभक्तियों के आधार पर इस समास को छह भेदों में विभक्त किया गया है, जो निम्न प्रकार हैं :—

क) बीया (द्वितीया) तत्पुरुष ->

जिसमें प्रथम पद द्वितीया विभक्ति का एवं अन्तिम पद प्रथमा विभक्ति का होता है, उसे द्वितीया बहिकरण तत्पुरुष समास कहते हैं।

जैसे —

किसणं सिओ > किसणसिओ (कृष्ण के सहारे)
अग्गिं पडिओ > अग्गिपडिओ (अग्नि में गिरा हुआ)
आसां अतीओ > आसातीओ (आशा से अधिक)
दिवंगओ > दिवंगओ (मृत्यु को प्राप्त)
सुहंपत्तो > सुहपत्तो (सुख को प्राप्त)
कट्ठं आवण्णो > कट्ठावण्णो (कष्ट से प्राप्त)

नोट : (इसमें सिअ, अतीत, पडिय, गअ, पत्त एवम् आवण्ण शब्दों के प्रसंग में द्वितीया विभक्ति रहने के कारण द्वितीया तत्पुरुष समास हुआ।)

तृतीय तत्पुरुष समास :- जिसके प्रथम पद तृतीया विभक्ति तथा अन्तिम (उत्तर) पद प्रथमा विभक्ति का हो, उसे तृतीय तत्पुरुष समास कहते हैं। जैसे -

दयार जुत्तो > दया जुत्तो (दया से युक्त)

चतुर्थी एवं षष्ठी तत्पुरुष समास :- जिसके प्रथम पद चतुर्थी या षष्ठी विभक्ति एवं अंतिम पद प्रथमा विभक्ति का हो, उसे चतुर्थी या षष्ठी तत्पुरुष समास कहते हैं।

जैसे - मोक्खस्स गाणं > मोक्ख णाणं (मोक्ष का ज्ञान)

पंचमी तत्पुरुष समास :- जिसके प्रथम पद पंचमी विभक्ति एवं उत्तर (अंतिम) पद प्रथमा विभक्ति हो, उसे पंचमी तत्पुरुष समास कहते हैं। जैसे -

संसाराओ भीओ > संसार भीओ (संसार से भयभीत)

सप्तमी तत्पुरुष समास :- जिसके प्रथम पद सप्तमी विभक्ति एवं उत्तर पद प्रथमा विभक्ति का हो, उसे सप्तमी तत्पुरुष समास कहते हैं। जैसे - वरेसु सेट्ठो > वरसेट्ठो (वर श्रेष्ठ)

२) सामानाधिकरण तत्पुरुष समास :

जिसमें दोनों पद प्रथमा विभक्ति का हो, उसे सामानाधिकरण तत्पुरुष समास कहते हैं। इसे कर्मधारय समास भी कहते हैं। जैसे :-

कण्हं च तं वत्थं > कण्हवत्थं (काला वस्त्र) (यहाँ दोनों पद प्रथमा विभक्ति वाले हैं। अतः यह सामानाधिकरण तत्पुरुष समास है)।

सामानाधिकरण तत्पुरुष समास के प्रकार :

प्राकृत व्याकरण के अनुसार सामानाधिकरण तत्पुरुष समास के नौ प्रकार होते हैं :-

(क) विशेषण पद (ख) विशेषणोभय पद (ग) उपमान पूर्वपद (घ) उपमेयोत्तर पद (ङ) उपमानोत्तर पद

(क) विशेषण पद :- इसमें पहला पद विशेषण, दूसरा पद विशेष्य होता है, तथा दोनों पद प्रथमा विभक्ति के होते हैं। जैसे :-

धीअं च तं वत्थं च > धीअवत्थं (पीला कपड़ा)

यहाँ पर पूर्व पद सीओ (शीत) तथा (वस्त्र) का विशेषण है और दोनों पद प्रथमा विभक्ति के भी हैं। अतः यहाँ समानाधिकरण तत्पुरुष अथवा कर्मधारय समास है।

(ख) विशेषणोभयपद → इसमें दोनों पद विशेषण होते हैं। जैसे – सीओ य तं उण्हं य जलं = सीउण्हं जलं (शीतल एवं उष्ण जल)

(ग) उपमान – पूर्व पद → इसमें प्रथम पद उपमान और दूसरा पद साधारण धर्मवाले होते हैं। जैसे:
घणो इव सामो = घणसामो (मेघ के समान श्याम वर्ण)

(घ) उपमेयोत्तर पद → इसमें प्रथम पद उपमान और दूसरा पद उपमेय होते हैं। जैसे:
चंदो इव मुहं = चंदमुहं (चंद्रमा के समान मुख)

(ङ) उपमानोत्तर पद → इसमें प्रथम पद उपमेय और अन्य पद उपमान होते हैं। जैसे –
पुरिसो वग्घो व्व = पुरिसवग्घो (पुरुष ही व्याघ्र है)

इस प्रकार, समानाधिकरण तत्पुरुष का दूसरा नाम कर्मधारय है।

तत्पुरुष समास के अन्य भेद

तत्पुरुष समास के अन्य दो प्रकार के भेद और भी पाये जाते हैं।

(1) ण तप्पुरिस (नञ् तत्पुरुष) समास
(2) पादि (प्रादि) तप्पुरिसो (तत्पुरुष) समास।

1) नञ् तत्पुरुष समास → जिसमें प्रथम पद नकारात्मक निषेधात्मक तथा दूसरा पद संज्ञा अथवा विशेषण हो, उसे नञ् तत्पुरुष समास कहते हैं। जैसे –

ण = अ – णलोओ = अलोओ (अलोकः)
ण = अण – णआयारो = अणायारो (अनाचारः)

ध्यातव्य: ध्यातव्य है कि इसमें व्यंजन से पहले आनेवाले 'ण' के स्थान में 'अ' तथा स्वर के पहले 'ण' के होने पर उसके स्थान में 'अण' हो जाता है।

2) प्रादि तत्पुरुष समास → जिस समास में प्रथम पद 'प' (प्र) आदि उपसर्ग सहित हो, उसे प्रादि तत्पुरुष समास कहते हैं। जैसे –

पगतो आयरिओ > पायरिओ (प्राचार्य)

द्विगु समास: जिस तत्पुरुष समास का पूर्व पद संख्यावाचक शब्द हो, उसे द्विगु समास कहते हैं।

द्विगु समास के प्रकार →

(i) एकवद्भावी द्विगु समास (ii) अनेकवद्भावी समास

(i) एकवद्भावी द्विगु समास → जो द्विगु समास समाहार अर्थ होता है, वह एकवद्भावी कहलाता है, और उसमें सदा नपुंसक लिंग और एकवचन होता है। जैसे -

नवण्हं तत्ताणं समाहारो = नवतत्तं (नवतत्वम्)

चउण्हं कसायाणं समूहो = चउक्कसायं (चतुष्कषायम्)

तिण्हं लोगाणं समूहो = तिलोयं (त्रिलोकम्)

(ii) अनेकवद्भावी द्विगु समास → संज्ञा में जो द्विगु होता है, वह अनेकवद्भावी कहलाता है, और इसमें वचन और लिंग का कोई नियम नहीं रहता है। जैसे -

तिण्णि लोया = तिलोया (त्रिलोकाः)

चउरो दिसाओ = चउदिसा (चतुर्दिशः)

बहुव्रीहि समास एवम् उसके प्रकार

बहुव्रीहि समास की परिभाषा →

जिस समास में पूर्व एवं उत्तर पद से भिन्न कोई अन्य पद की प्रधानता हो, उसे बहुव्रीहि समास कहते हैं। जैसे - पीअं अंबरं जस्स सो पीअंबरो कण्हो (पीताम्बरः कृष्णः)। इसमें पूर्व और उत्तर पद से भिन्न अन्य पद 'कण्हो' की प्रधानता है।

ध्यातव्य : → (क) इसके समस्त पद विशेषण होते हैं। अतः इनके लिंग, वचन आदि अपने विशेष्य के अनुसार होते हैं।

(ख) इसका विग्रह (पदच्छेद) करते समय 'ज' (यत्) शब्द अथवा इसके अन्य किसी रूप का प्रयोग किया जाता है।

बहुव्रीहि समास के प्रकार

बहुव्रीहि समास के दो प्रकार हैं -

(i) समानाधिकरण (समान विभक्ति) और

(ii) व्यधिकरण (असमान विभक्ति) बहुव्रीहि समास